

SIDDH. K. zu P. 7, 3, 59. कपीनां संघाताः — पूर्यन्तः — दिशो दश BHATT. 7, 30. पत्पृथिव्या ऊनं ततेनापूरुम् CAT. Br. 11, 3, 2. पूरित = पूर्णा P. 7, 2, 27. VOP. 26, 144. AK. 3, 2, 48. H. 1473. an. 2, 149. MED. p. 22. = पूर्त् TRIG. 3, 3, 169. जलपूरितमञ्जलिम् R. GORR. 2, 111, 32. 5, 14, 48. KATHÁS. 33, 46. VID. 289. BHART. 1, 48. SPR. 748. RAGH. 9, 63. PANKÁT. 21, 13. 70, 17. SÍ. zu RV. 1, 8, 7. Ç'g. 9, 64. erfüllen (mit Geräusch, auch vom Geräusch selbst gesagt): कृत्स्नश्रयवोषेण पूर्यन्तो वसुंधराम् MBH. 3, 2114. पूर्याणात्रयस्वनिः । दिशः प्रदिशश्चैव 9, 769. स मार्यमाणो भीमेन ननाद विपुलं स्वनम् । पूर्यस्तद्वनं सर्वं जलार्द्रं इव डुडुभिः 1, 6037 (HIP. 4, 55). 10, 418. आशीर्गयं च गाथानां पूर्यामास वेष्म तत् R. 2, 65, 6. MBH. 3, 2859. einen Laut voll machen so v. a. verstärken: स शब्दः पूरितः — भूतसंघैर्मुदा युतेः 10, 412. शङ्खम् eine Muschel mit Luft anfüllen, blasen in 7, 762. 4170. R. 6, 37, 39. PANKÁT. ed. ord. 37, 18. पूर्याणानां शङ्खानामुद्भूङ्खनिः KATHÁS. 29, 48. धनुः einen Bogen voll machen so v. a. spannen: न शंकरातोलायितुमपि पूर्यितुं कुतः (धनुः) R. GORR. 1, 34, 10. R. SCHL. 4, 67, 17. (धनुः) श्रशक्यं पूरितुम् 8 (पूर्यितुम् 69, 9 GORR.). पूर्यस्व (धनुः) शरैरेषैव 75, 3 (पूर्येदम् ohne शरेण 77, 3 GORR.). बाणामा कर्णात्पूर्यित्वा मसर्जं कृ bis zum Ohre anziehen 6, 79, 16. आकर्णपूरितं शरम् 67, 28. — 2) voll machen so v. a. vollkommen bedecken, überziehen, bestecken, überschütten: पूर्यन्त्रुनादाभिर्वाक्निर्भिर्बुवस्तलम् KATHÁS. 19, 65. स्रग्दामपूरितशिल्पे (वपुसु) HIP. 3, 13. केशरस्य च पूर्याणां करेणामथ राघवः । अलकं पूर्यामास मैथिल्याः R. 2, 96, 20. एनम् — शैरनेकसाकृतेः पूर्यामास सर्वतः MBH. 7, 3987. R. 6, 86, 36. बाणधारामकृन्नेत् सतोयद (so ist zu schreiben) इवाम्बरे । राघवं रावणो वीरस्तडागमिव पूर्यत् 88, 3. पूरितः शरजालेन 84. चातकस्त्रिचतुरान्ययःकपान्याचते जलधरं पिपासितः । सो ऽपि पूर्यति विश्रमन्मसा überschütten und zugleich beschenken Spr. 908. — 3) mit Gaben überschütten, — überhäufen, beschenken: तं च चित्रकरं राजा तुष्टा वितैरपूर्यत् KATHÁS. 5, 30. 21, 60. 29, 176. 36, 43. 43, 260. तत्रैव तेन शुकान्नदक्षिणादिभिर्बन्धुम् । अपूर्यत 33, 135. कृत्स्नयग्रामपूरित 40, 74. — 4) erfüllen (einen Wunsch, ein Verlangen, eine Hoffnung, ein Versprechen u. s. w.): कामान्स्माकं पूर्य AV. 3, 10, 43. 29, 2. MBH. 1, 6489. R. GORR. 4, 19, 18 (med.). Gtr. 5, 14. मनोरथान् Spr. 587. समीकितं बन्धुषु पूर्येथाः MÁRK. P. 26, 36. स्पर्शाम्तेन पूर्य देकृत्स्नस्य MÁLAV. 54. अर्थिनामाशाम् Ç'ANTIC. 2, 21. Spr. 1259. इच्छाम् KATHÁS. 9, 47. प्रतिज्ञाम् R. 6, 104, 27. यथाशक्त्या पूर्यन्तः स्वकर्म MBH. 8, 828. — 5) einen Zeitraum voll machen so v. a. ablaufen lassen: कथं प्रतिज्ञां संश्रुत्य वनवासे कृतं मम । अपूर्यित्वा तं कालं मत्सकाशमिच्छामः ॥ R. 3, 67, 21.

— desid. पुपूर्यति P. 7, 1, 102.

— अति sich stark füllen, stark anschwellen: अतिपूर्यतः — मेकृदधेः MBH. 6, 4783.

— अनु caus. erfüllen: अनुपूर्यतु प्रियं वः Gtr. 1, 25.

— अभि 1) voll machen: स्वल्पमेव अभि तत्पृणीहि P. 1. GRHJ. 3, 1. — 2) पूर्यते sich füllen, voll werden: अभि नः पूर्यतां रयिः P. 1. GRHJ. 3, 4. यद्यद्यजति कामानां तत्सुखस्याभिपूर्यते MBH. 12, 6502 = 6633 (wo aber यद्यस्त्यजति gelesen wird). पूर्या voll, voll von (instr. gen.): सोमस्येवाभिपूर्णास्य पौर्णमास्याम् MBH. 11, 622. नावम् — रत्नाभिपूर्णाम् 3, 15713. नारीणामभिपूर्णास्तु काश्चित् (नावः) R. 2, 89, 18. शोकवाष्पाभिपूर्णा (वदन)

IV. Theil.

5, 18, 15. — caus. füllen, anfüllen: सुवम् ÇAT. Br. 3, 1, 4, 17. KÁTJ. Ç. 7, 3, 18. SUÇR. 1, 364, 10. beladen: उष्ट्रपञ्चशतीं नानावस्त्रभारमिपूरिताम् KATHÁS. 44, 77. überschütten: गौतमं च — शर्वद्याभ्यपूर्यत् MBH. 6, 1721. beschenken: जना ये ऽस्मिन्कृशधनास्तान्धनेनाभिपूर्य HARIV. 6556. erfüllen so v. a. sich Jmder ganz bemächtigen: शोको मामभ्यपूर्यत् R. 5, 56, 111. पुत्रशोकाभिपूरिता MBH. 14, 2012. — Vgl. अभिपूर्णा.

— समभि caus. füllen, anfüllen: बालुकाभिस्ततः शक्रे गङ्गा समभिपूर्यत् MBH. 3, 10723.

— अत्र, अत्रपूर्णा voll von: मधुमेदोऽत्रपूर्णा च पृथिवी HARIV. 11993. — रात्रिभिरेवावपूर्यते BRH. ÁR. UP. 1, 3, 14 fehlerhaft für रात्रिभिरेवा च पू०).

— आ 1) füllen, ausfüllen, ergänzen: आ रोदसी अपृणाः RV. 7, 13, 2. 2, 15, 2. 22, 2. 3, 2, 7. 3, 10. आपूर्णतो अन्नरिता 7, 75, 3. 10, 2, 4. 96, 2. AV. 4, 33, 8. यद्विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद्धतेन 7, 87, 1. 13, 1, 9. VS. 3, 7. आ जाता मुक्ततो पृण RV. 8, 1, 18. erfüllen (einen Wunsch): स्तोतुः काममा पृणा 1, 87, 5. गोभिः 16, 9. काममा पृणा वसुनाम् 3, 30, 19. 6, 45, 21. med. sich füllen (den Bauch, ein Gefäß u. s. w.): पृञ्जेन वक्षणा आ पृणाधम् 1, 162, 5. 3, 33, 12. आरुव्यचाः पृणातामिभिरनैः 80, 1. आ यः सोमैर्न गृहर्माण्येप्रत 5, 34, 2. पृञ्जे विश्वास्तविषोरा पृणास्व 6, 41, 4. सप्त योनीरा पृणास्व घृतेन VS. 17, 79. sich sättigen: यस्य ब्रह्मणिपि मुक्ततू अत्रैव आ पृक्तवान् शरदः पृणीथे so dass ihr in Jahren seiner frommen Begeisterung nicht satt werdet RV. 7, 61, 2. — 2) आपूर्यते sich füllen, sich anfüllen, voll werden ÇAT. Br. 1, 6, 3, 17. वक्रमापूर्यते ऽपृणाम् füllt sich mit Thränen SUÇR. 1, 116, 14. (त्राणः) अपृणमुखेष्पिकृन्नेरापूर्यते 265, 14. आपूर्णा अस्य कलशः RV. 3, 32, 15.

अपूर्यत मही चापि सल्लिनेन समस्तः MBH. 1, 1302. अपूरिः KÁT. 7. BHATT. 6, 32. यानयात्रम् — आपूर्णमापूर्णम् (तैः) HARIV. 8403. रुधिरापूर्णास्त्रीलावापी KATHÁS. 9, 46. आपूर्णार्णव BHÁG. P. 5, 13, 24. आपूर्णतुङ्गस्तन KATHÁS. 27, 65. स रात्रिभिरेवा च पूर्यते ऽप च क्षीयते ÇAT. Br. 14, 4, 3, 22. 23. आपूर्यमाणपत्न 6, 2, 3, 28. 11, 1, 2, 4. 14, 9, 1, 18. 2, 1. ÁÇV. GRHJ. 1, 4, 14. ÇAT. Br. 1, 6, 3, 24. 7, 2, 2. 2, 4, 4, 18. स राजपुत्रो ववृध आशु पुञ्जा इवाडुपः । आपूर्यमाणः पितृभिः काष्ठाभिरिव सो ऽन्वहम् ॥ BHÁG. P. 4, 12, 31. शनैरापूर्यमाणेन वपुषा धनुषा च (an Umfang zunehmen und sich spannen, gespannt werden) KATHÁS. 27, 8. नभस्तथा । आपूर्णमासोच्छ्वेदेन erfüllt MBH. 3, 8533. पूर्णाकृतिभिरापूर्णास्त्रिभिः gesättigt 14, 627. भृत्यैरापूर्यते नृपः überschwemmt werden von, einen Ueberfluss an Dienern haben HIT. 11, 72. — caus. 1) füllen, anfüllen, voll machen: तानिष ज्ञात आपूर्यति (die Sonne) ÇAT. Br. 6, 7, 3, 10, 7, 5, 3, 27. 9, 2, 3, 17. 10, 4, 3, 18. (चर्मभस्त्रिकां) रत्नैर्नक्तमापूर्य DAÇAR. in BENF. Chr. 180, 24. जलापूरितसूत्रमार्ग RAGH. 16, 65. आसापूरितविषकृ RÍGA-TAR. 4, 574. तेषोभिरापूर्य जगत्समयम् BHÁG. 11, 30. दत्तायादात्प्रसूतिं च यत आपूरितं जगत् BHÁG. P. 3, 12, 55. वंशमापूर्यिष्यन्ति क्षोधा इव मकार्णवम् HARIV. 4377. य उभौ कर्णा — सत्यद्वेषा वेदनापूर्यति (vom Lehrer) KULL. zu M. 2, 144. यतं ऊनं तत् आ पूर्याति AV. 12, 1, 61. (mit Geräusch) erfüllen: महीमापूर्यामास घोषेण MBH. 1, 2829. 3, 714. DEV. 2, 32. BHATT. 6, 118. vom Geräusch selbst: स तूर्यघोषः मुमकारान्द्वेवमापूर्यन्निव R. 2, 81, 3. mit Luft erfüllen, blasen in: शोभ्रमापूर्य वाद्यानि R. 6, 73, 11. erfüllen (einen Wunsch): आ न् कामं पूपूर्यत् RV. 7, 62, 3. — 2) vollkommen bedecken, bestecken, überschütten: लसन्निदस्तस्यापूरितभूतलैः । बलैः KATHÁS. 18, 2. ककुदं तस्य चामाति स्कन्धमापूर्य दिधुञ्जतम् MBH. 13, 835. केशान् — आपूर्यन्ति वनिता नवमा-